छुटकू उड़ चला...

कहानीः क्रिस्तियान मेरवाइ
चित्रः एम्मा द वू

एकलव्य

छुटकू उड़ चला...
CHUTKOO UD CHALA...
कहानी: क्रिस्तियान मेरवाइ
चित्र: एम्मा द वू
अँग्रेज़ी से अनुवाद: दीपाली शुक्ला

Originally published as 'Comme tous les oiseaux'
by Mijade Publications
Text © 2008 Christian Merveille
Illustrations © 2008 Emma de Woot
हिन्दी अनुवाद © 2011 एकलव्य

मार्च 2011 / 5000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2014 / 3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: अक्तूबर 2016 / 3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण फरवरी 2018 / 3000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2019 / 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित।
ISBN: 978-81-7925-274-1
मूल्य: ₹ 70.00

प्रकाशक: ज्योत्स्ना प्रकाशन
430-31, शनिवार पेठ, पुणे - 411030
ज्योत्स्ना प्रकाशन द्वारा केवल एकलव्य के लिए प्रकाशित

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 - 297 7770, 71, 72, 73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन +91 755 258 7551

छुटकू उड़ चला...

कहानीः क्रिस्तियान मेरवाइ
चित्रः एम्मा द वू

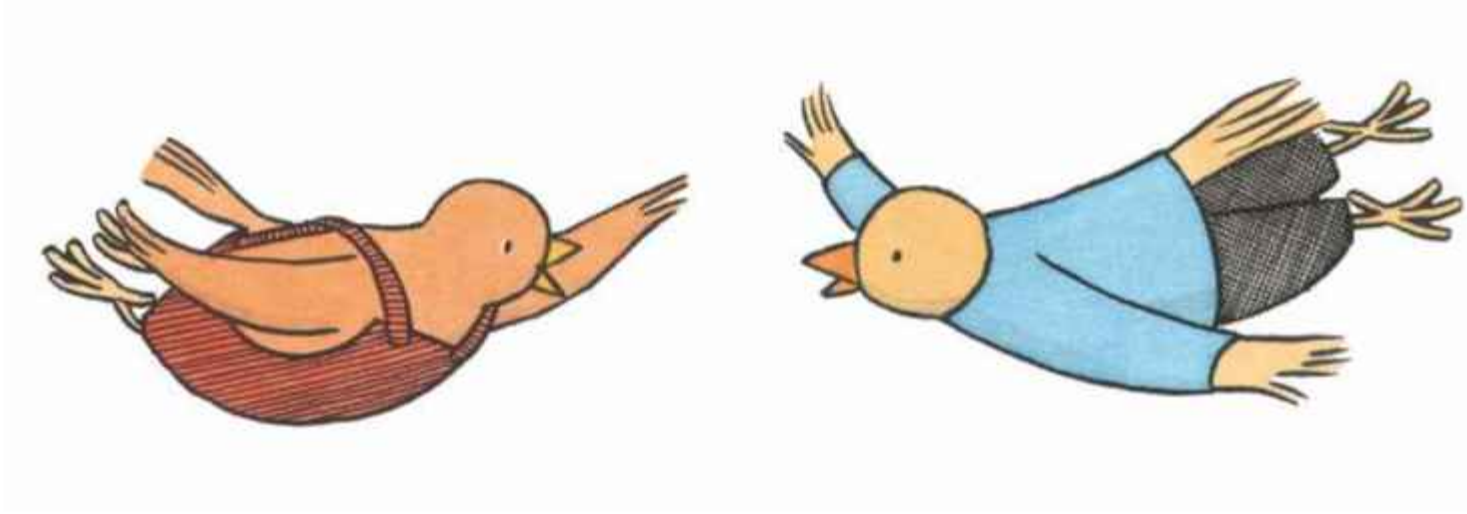

एकलव्य

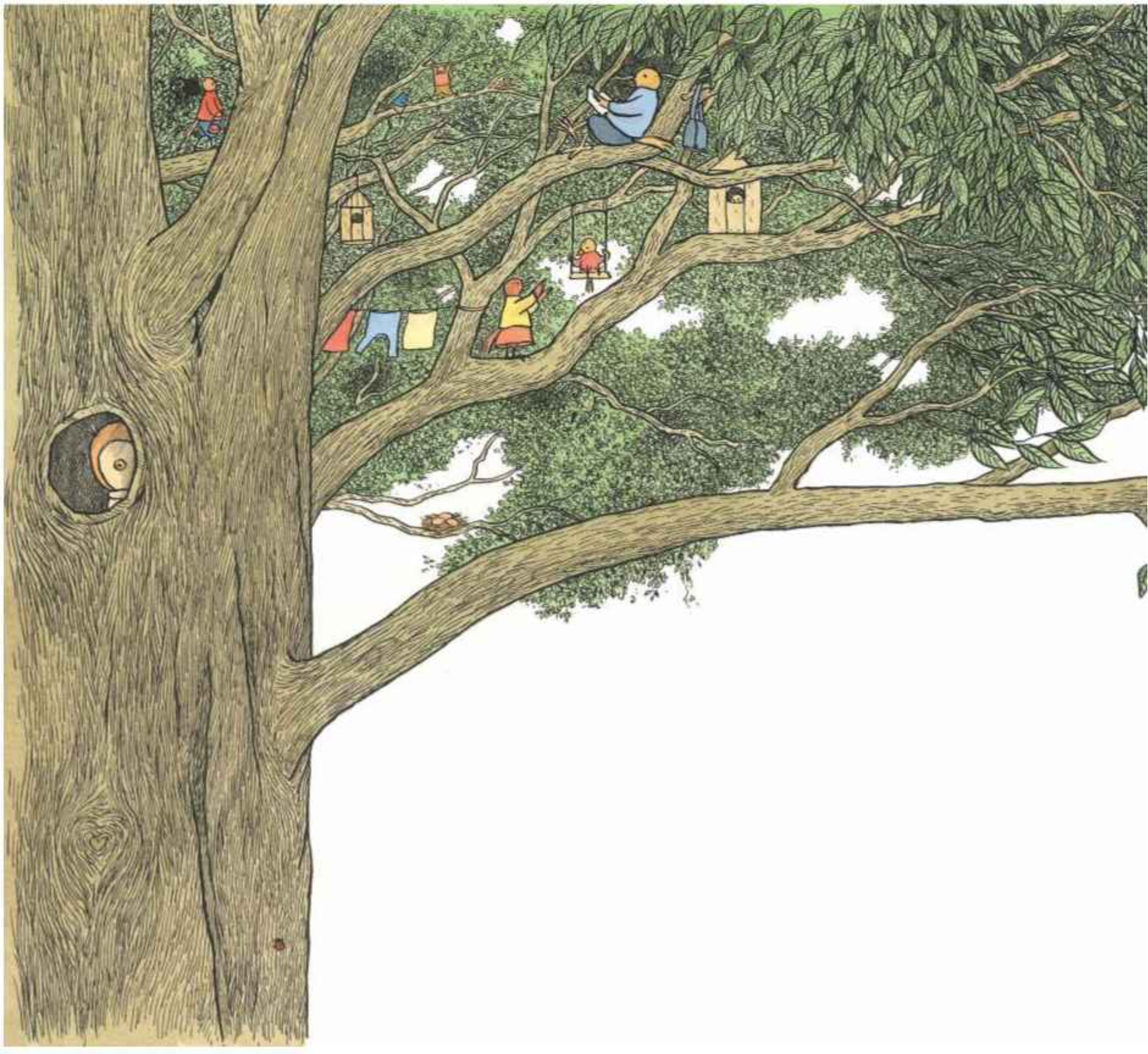

छुटकू पंछी परेशान है: उसे लगता है कि वह छोटा-सा है और अपने घोंसले में रहते-रहते ऊब गया है। "यहाँ तो मेरी ज़िन्दगी बेकार हो गई है। मैं दुनिया देखना चाहता हूँ, और जानना चाहता हूँ कि और लोग कैसे रहते हैं..."

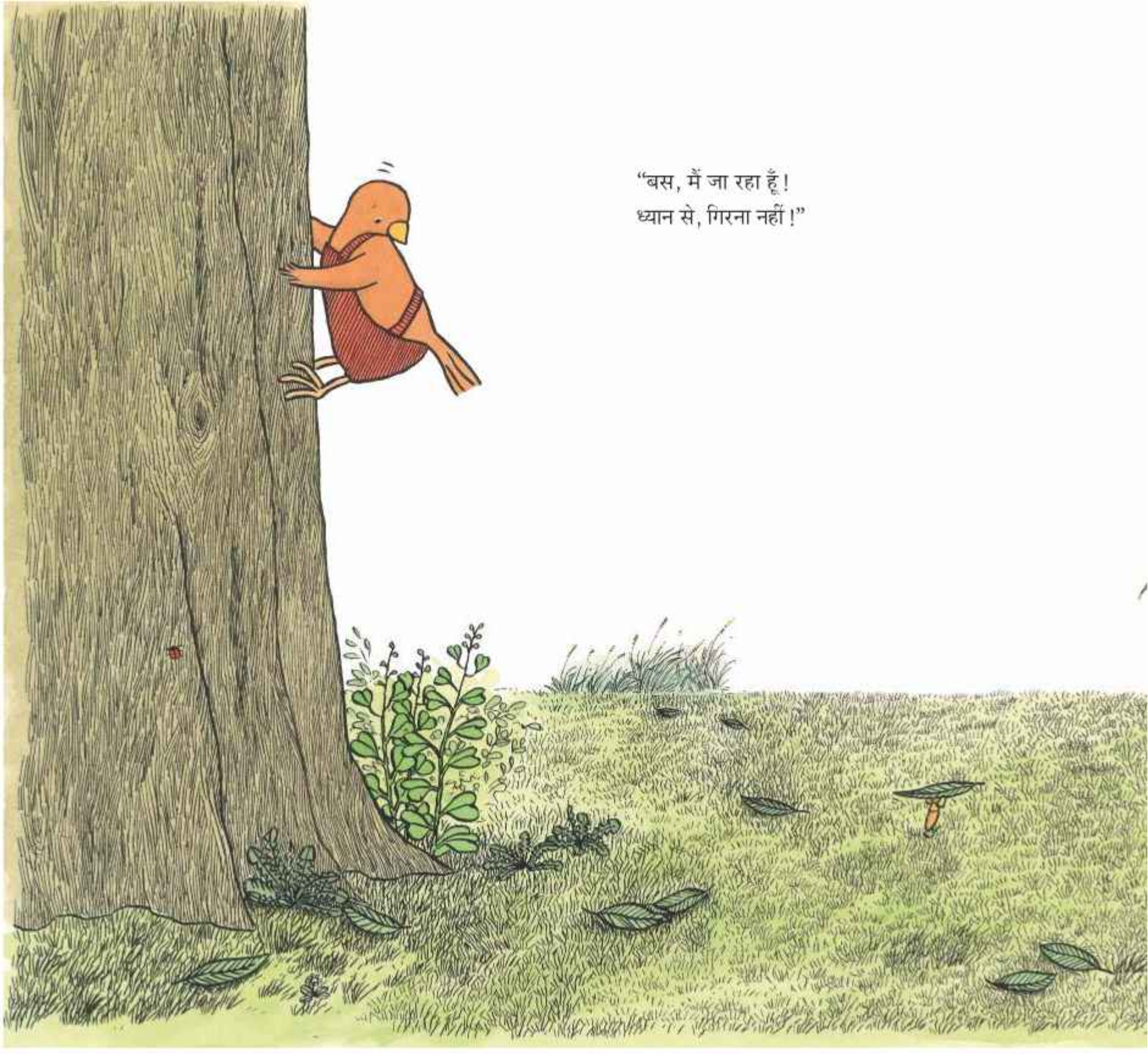

"बस, मैं जा रहा हूँ!
ध्यान से, गिरना नहीं!"

एक चुहिया इस दृश्य का मज़ा ले रही है।
वह गिरेगा? या नहीं गिरेगा?
पहली बार उसने किसी पक्षी को पेड़ से यूँ नीचे उतरते देखा है।

"अरे सुनो, तुम कौन हो?" छुटकू पंछी पूछता है। "मैं तो तुम्हें नहीं जानता।"
"मैं चुहिया हूँ, और तुम?"
"मैं छुटकू पंछी हूँ। मैंने अपना घोंसला छोड़ दिया है।
मैं दुनिया देखना चाहता हूँ, और जानना चाहता हूँ कि और लोग कैसे रहते हैं...
और तुम? तुम बताओ तुम्हारी ज़िन्दगी कैसी है?"

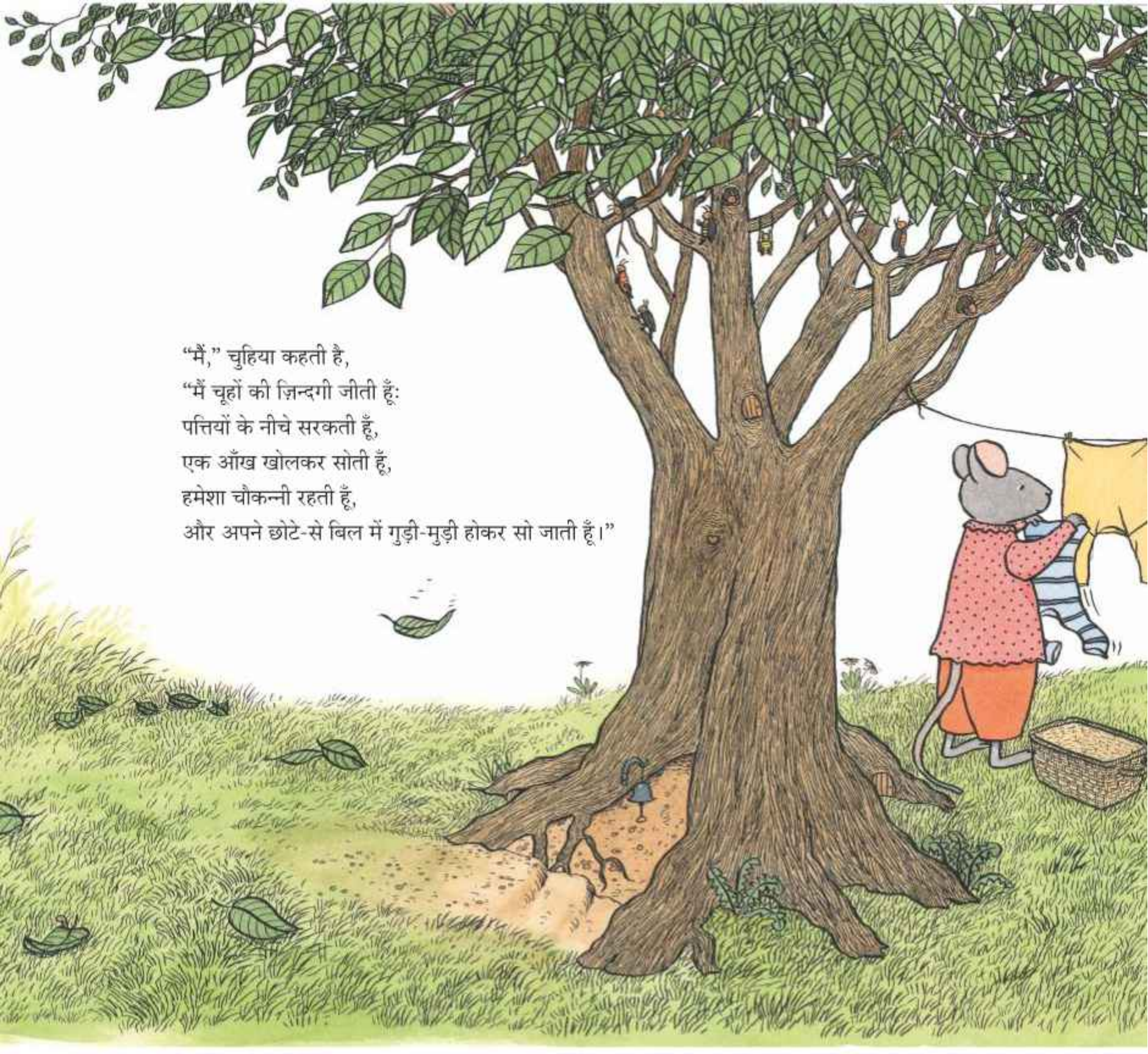

"मैं," चुहिया कहती है,
"मैं चूहों की ज़िन्दगी जीती हूँ:
पत्तियों के नीचे सरकती हूँ,
एक आँख खोलकर सोती हूँ,
हमेशा चौकन्नी रहती हूँ,
और अपने छोटे-से बिल में गुड़ी-मुड़ी होकर सो जाती हूँ।"

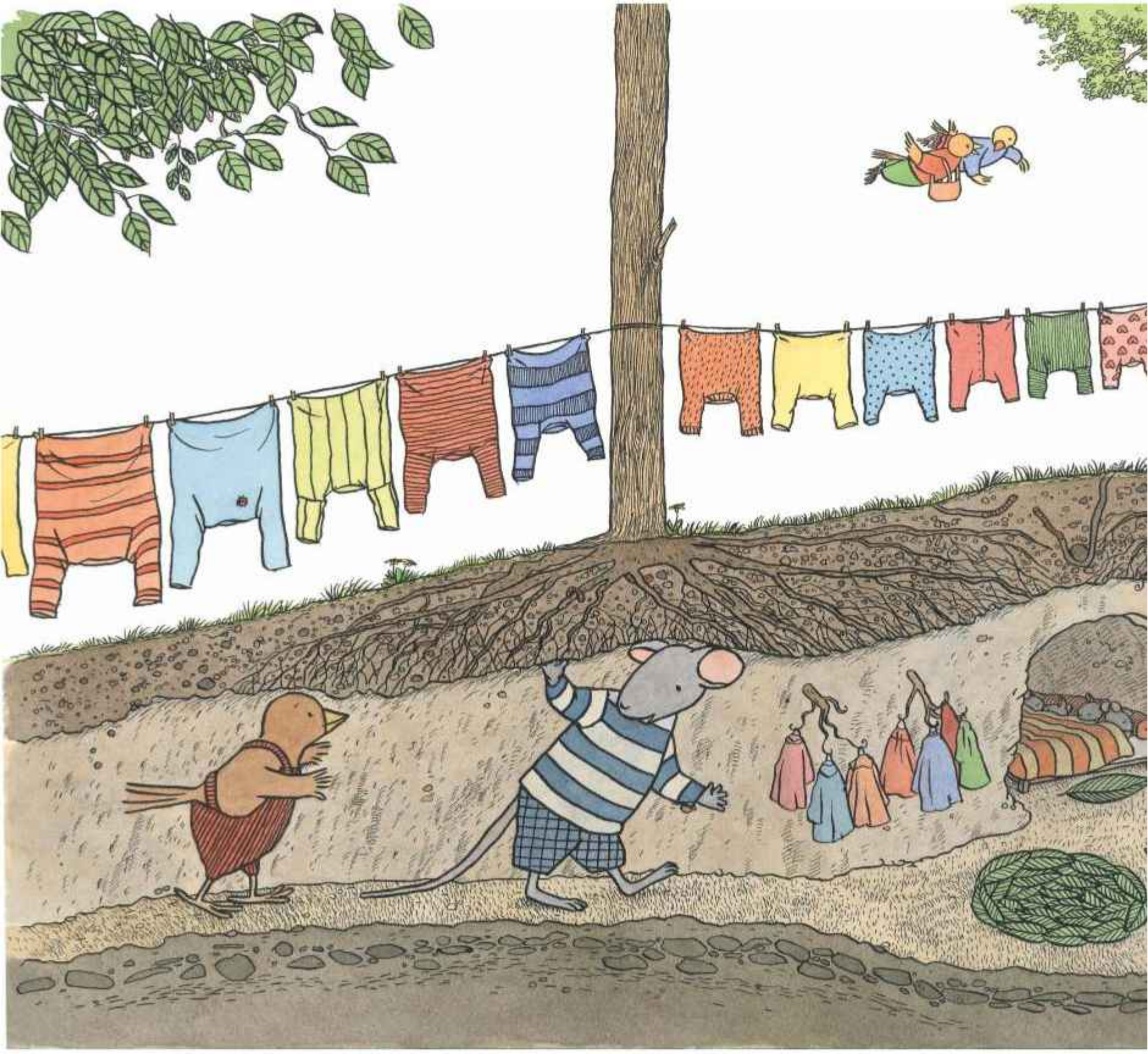

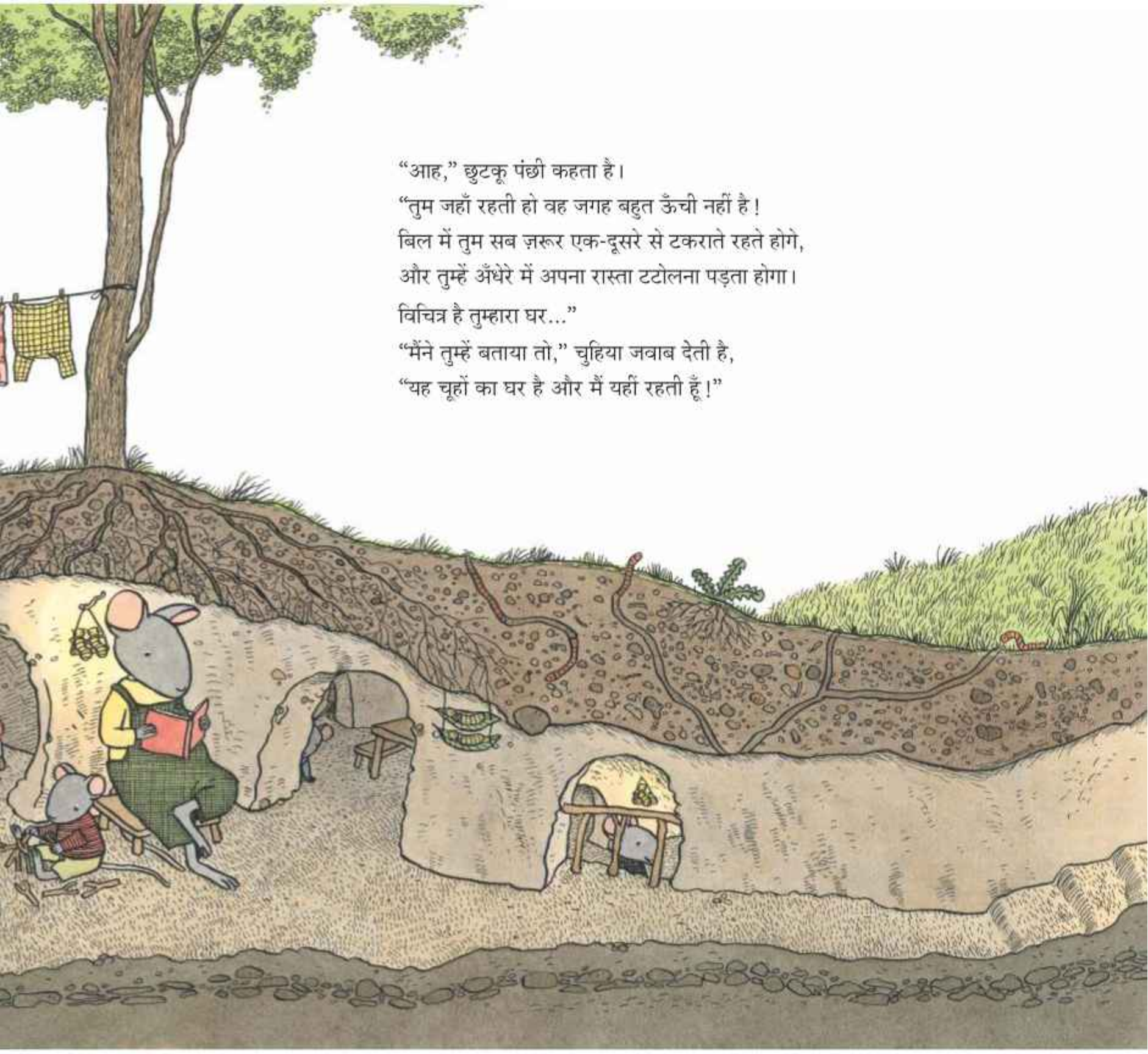

"आह," छुटकू पंछी कहता है।
"तुम जहाँ रहती हो वह जगह बहुत ऊँची नहीं है!
बिल में तुम सब ज़रूर एक-दूसरे से टकराते रहते होगे,
और तुम्हें अँधेरे में अपना रास्ता टटोलना पड़ता होगा।
विचित्र है तुम्हारा घर..."
"मैंने तुम्हें बताया तो," चुहिया जवाब देती है,
"यह चूहों का घर है और मैं यहीं रहती हूँ!"

"शुक्रिया," छुटकू पंछी कहता है।
"यह जगह बहुत ही छोटी है।
मुझे नहीं लगता कि मैं चूहे की तरह रह सकता हूँ।
किस्मत ने चाहा तो हम फिर मिलेंगे।
तुमने जो कुछ मेरे लिए किया उसका शुक्रिया लेकिन मैं अब आगे बढ़ना चाहता हूँ..."

"अरे भई, तुम कौन हो?" छुटकू पंछी पूछता है। "मैं तो तुम्हें नहीं जानता।"
"मैं बतख हूँ, और तुम?"
"मैं छुटकू पंछी हूँ। मैंने अपना घोंसला छोड़ दिया है।
मैं दुनिया देखना चाहता हूँ, और जानना चाहता हूँ कि और लोग कैसे रहते हैं...
और तुम बताओ, तुम्हारी ज़िन्दगी कैसी है?"
"मैं," बतख कहती है, "मैं तालाब में रहती हूँ।
मैं डुबकी लगाती हूँ, तैरती हूँ... बाकी बतखों की तरह!"

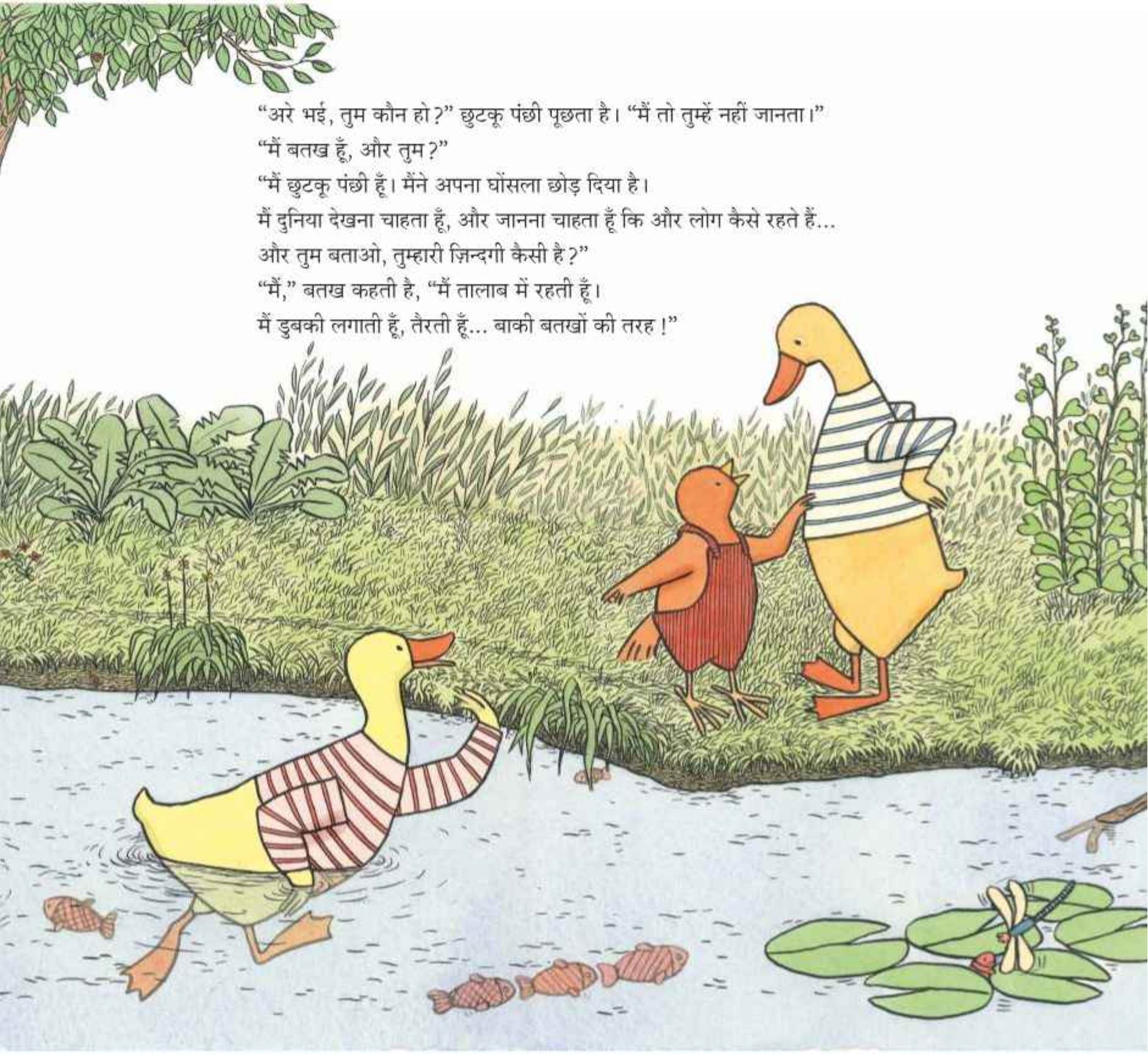

"आह ! यही तो, मैं तैर नहीं सकता !" छुटकू पंछी कहता है।
"मैं तो डूब रहा हूँ...."
बतख हँसते-हँसते छुटकू पंछी को बाहर निकालती है।
छुटकू सोचता है कि वह बतख की तरह नहीं रह पाएगा।
उसके पंख भी हैं और वो एक पक्षी है, पर वो तैराकी के लिए नहीं बना है।
उसे बढ़ना है और आगे, ऐसी ज़िन्दगी की खोज में जो उसके माफिक हो।

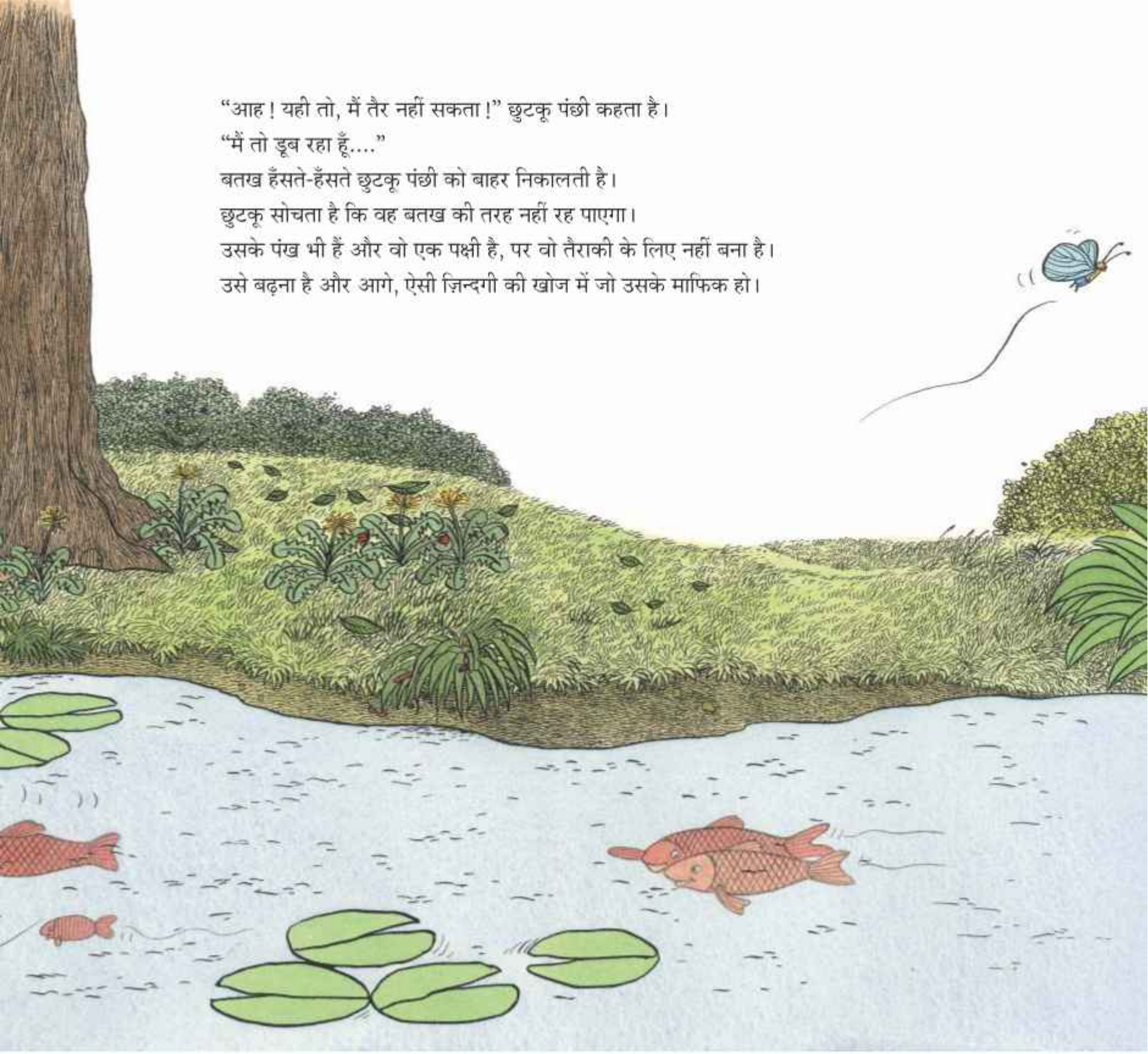

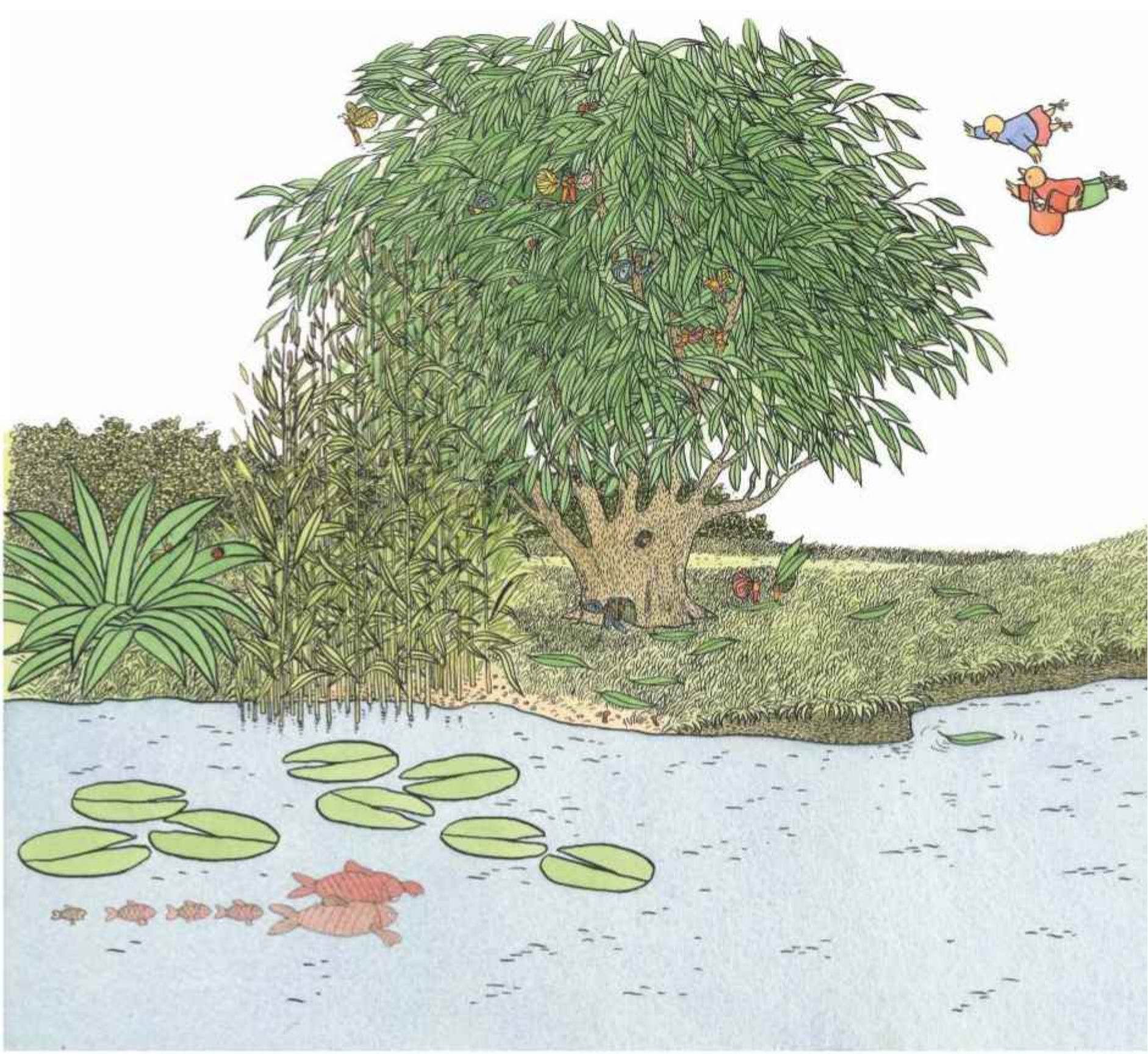

छुटकू पंछी थक गया है।
निराश है।
वह तो डूबने ही वाला था।
क्या वह रुक जाए?
या आगे बढ़े?
वह कहाँ जाए?
अचानक, बाड़ के पीछे से एक कुत्ता भौंकता है।

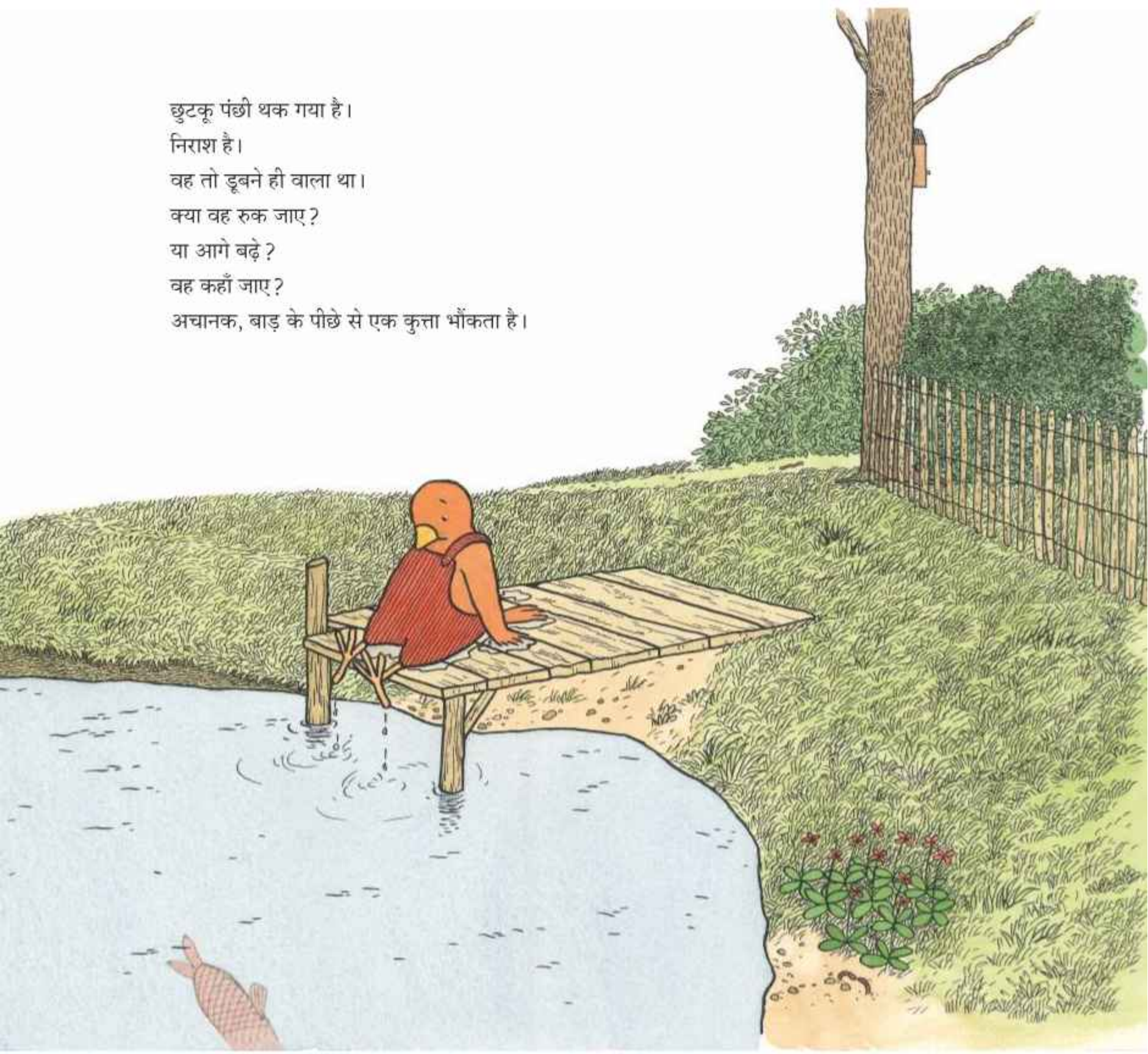

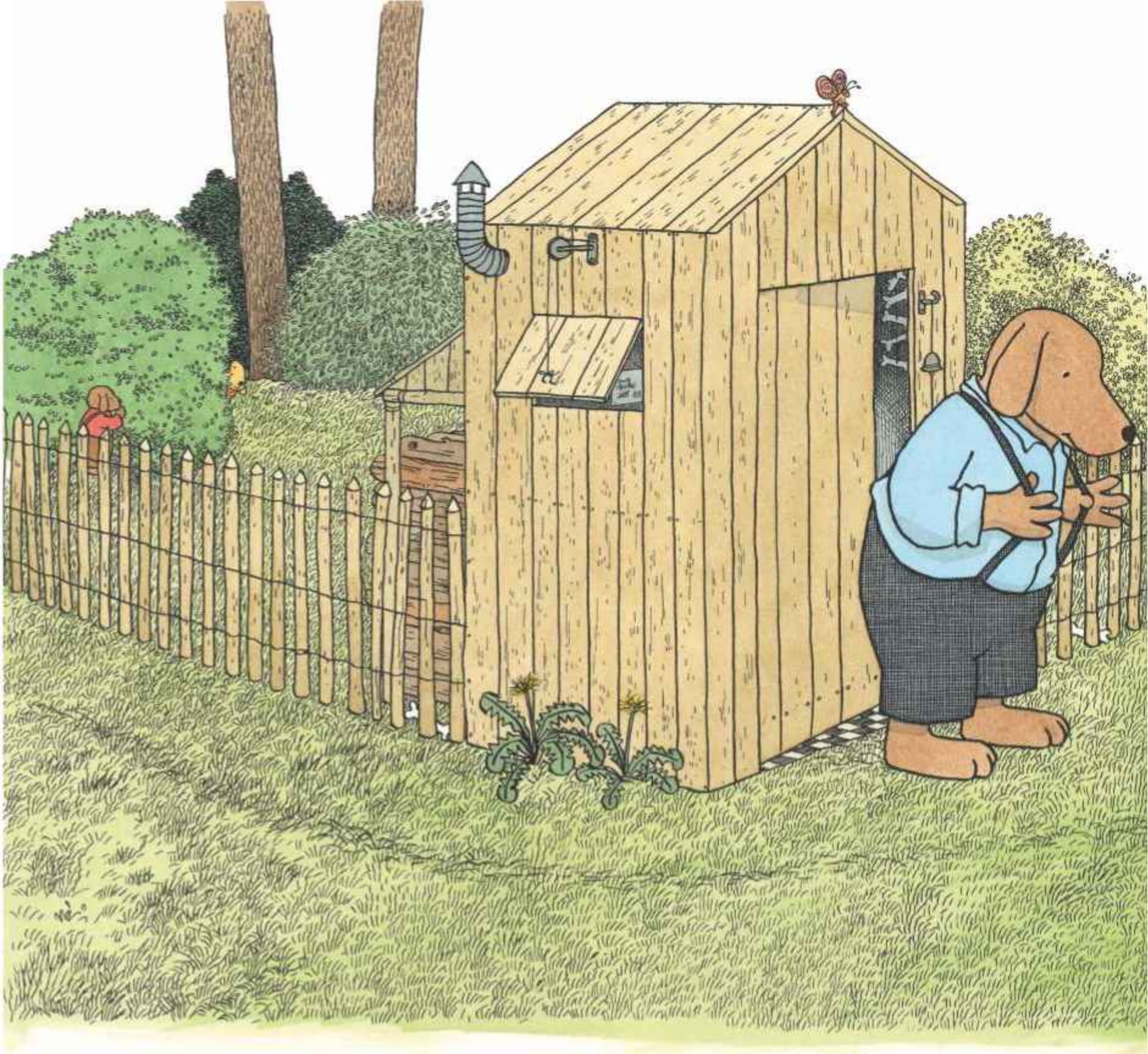

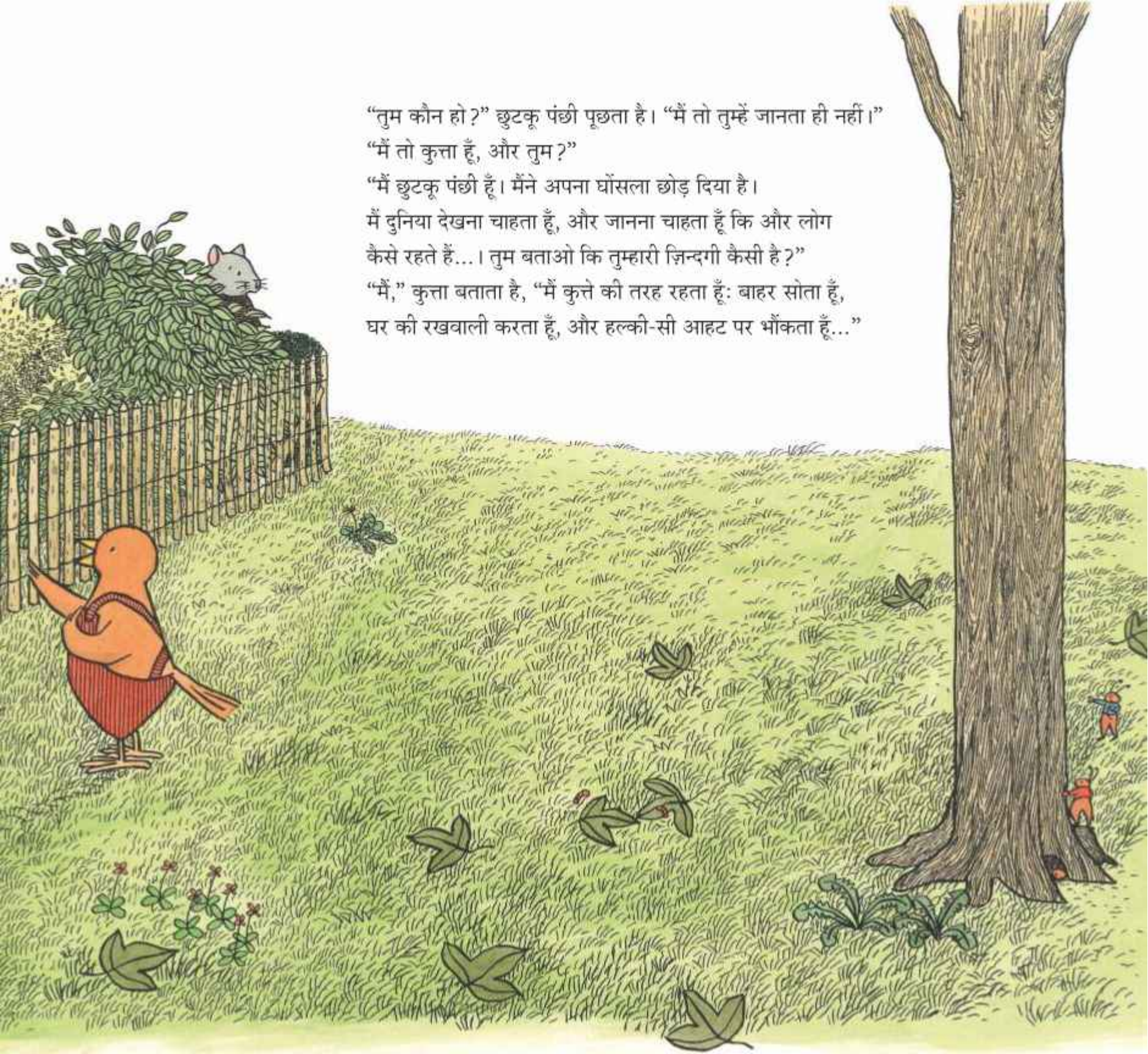

"तुम कौन हो?" छुटकू पंछी पूछता है। "मैं तो तुम्हें जानता ही नहीं।"
"मैं तो कुत्ता हूँ, और तुम?"
"मैं छुटकू पंछी हूँ। मैंने अपना घोंसला छोड़ दिया है।
मैं दुनिया देखना चाहता हूँ, और जानना चाहता हूँ कि और लोग
कैसे रहते हैं...। तुम बताओ कि तुम्हारी ज़िन्दगी कैसी है?"
"मैं," कुत्ता बताता है, "मैं कुत्ते की तरह रहता हूँ: बाहर सोता हूँ,
घर की रखवाली करता हूँ, और हल्की-सी आहट पर भौंकता हूँ..."

"भौं ! भौं !" कुत्ता भौंकने लगता है और वहाँ से गुज़र रही बिल्ली पर झपटता है।
"मैं इस बिल्ली को सहन नहीं कर सकता !
घर में सबने इसे सिर चढ़ा रखा है।
सब इसे ही दुलारते हैं और मुझे कोई नहीं।"
"इसका मतलब यह नहीं कि मुझे गिरा दिया जाए..."
छुटकू पंछी सोचता है। "ये कुत्ता तो मुझे कुचल ही डालता..."

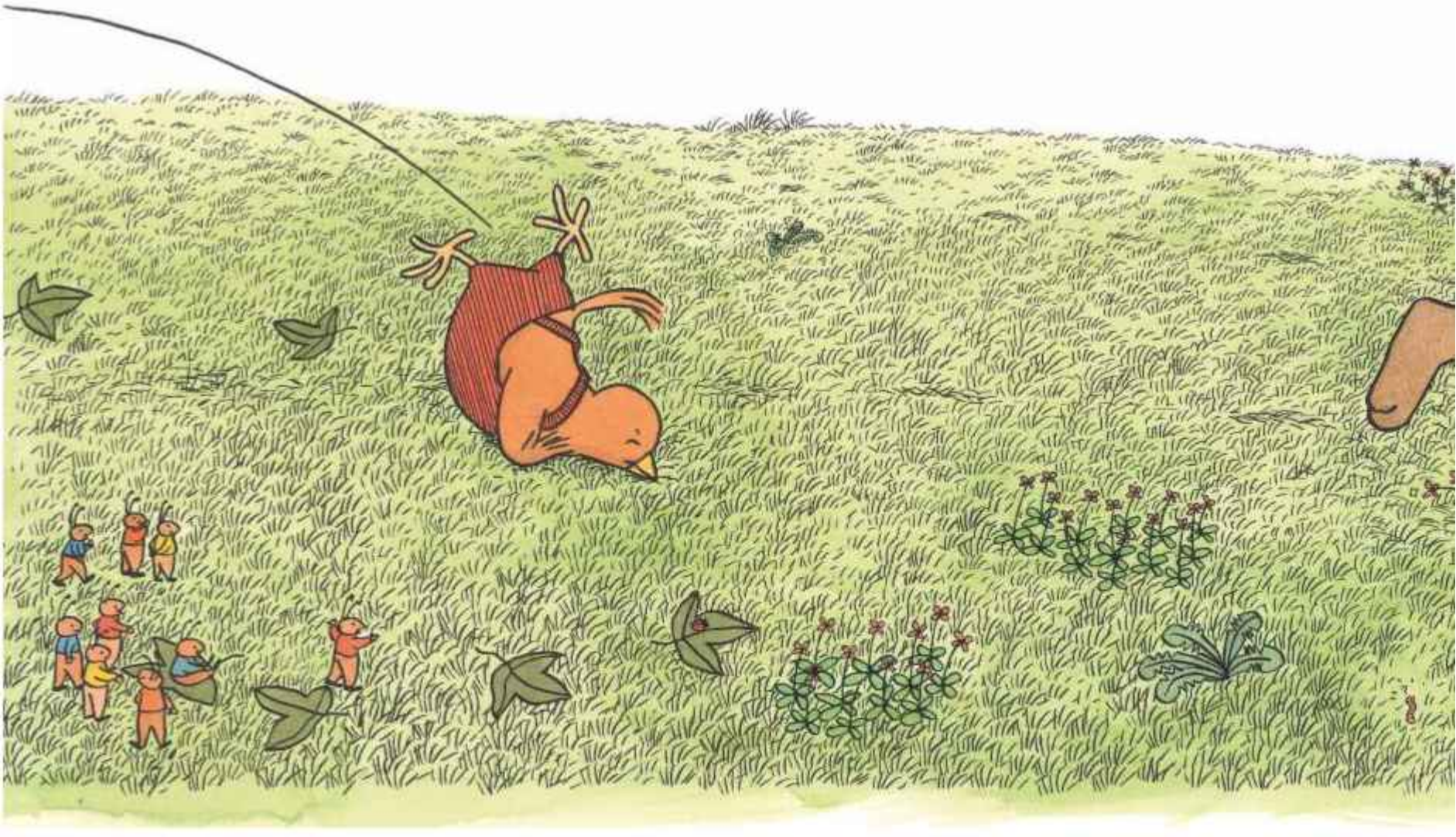

"इस बिल्ली से तो दूर रहना ही अच्छा है!
और कुत्ते से भी! मैं तो चला!"
छुटकू पंछी निकल पड़ता है।
वह दौड़ता है... तेज़... और तेज़...,
जितनी तेज़ी से उसके छोटे-छोटे पैर दौड़ सकते हैं,
और आश्चर्य! वह उड़ने लगता है...

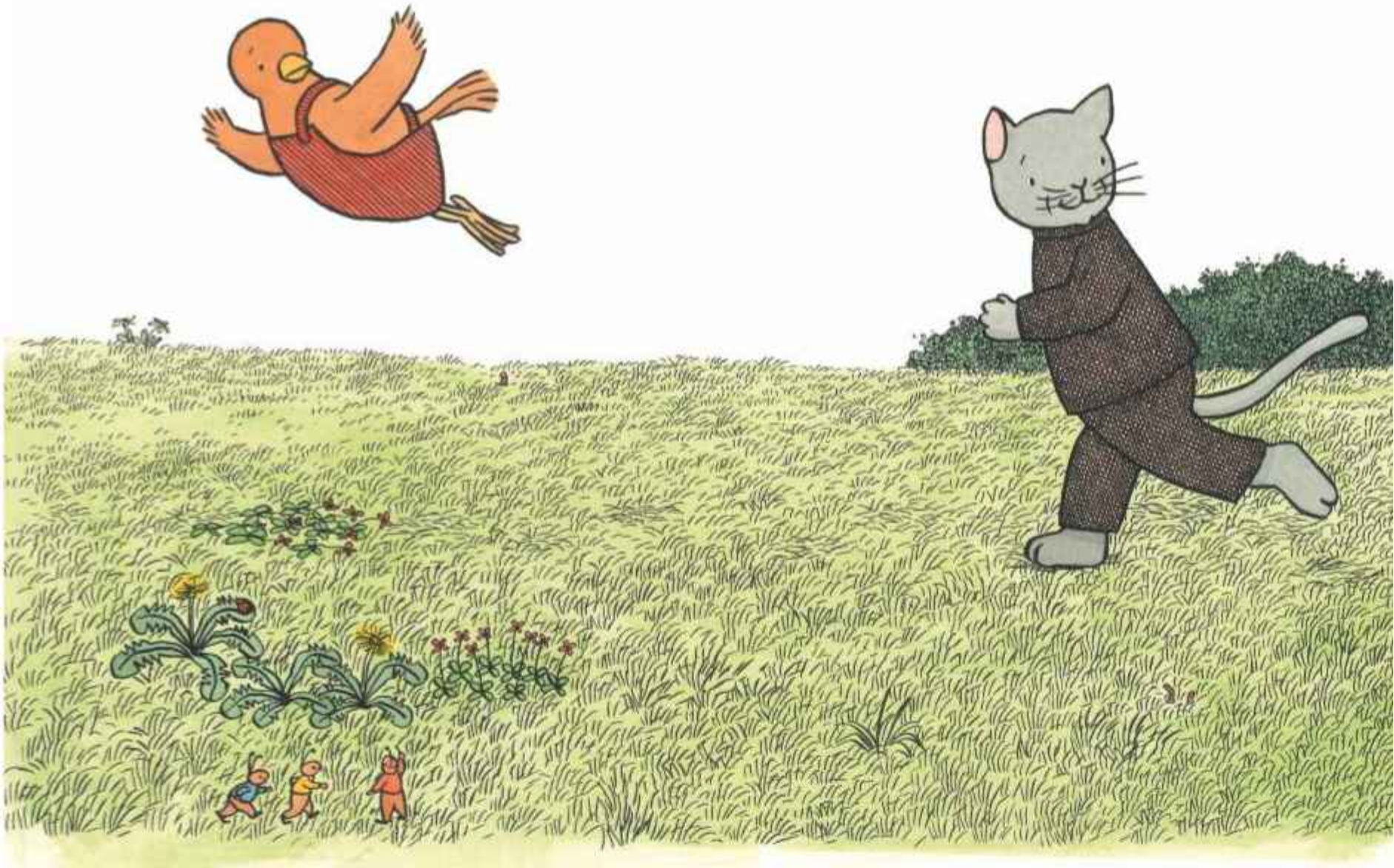

छुटकू पंछी आखिरकार पंछी है।
और सभी पंछियों की तरह,
छुटकू भी उड़ता है।
यही तो एक पंछी की ज़िन्दगी है!

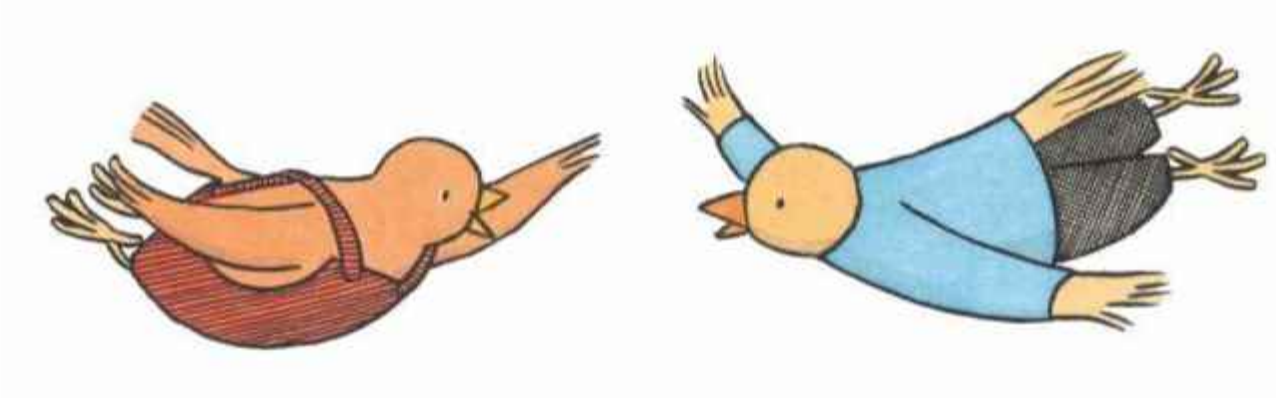

parag

एकलव्य

मूल्य: ₹ 70.00

9 788179 252741